हमारे सत्येन्द्र ठाकुर

संपादक

शंकर

हमारे खगेन्द्र ठाकुर

'परिकथा' के डॉ. खगेन्द्र ठाकुर
स्मृति अंक की पुस्तक-प्रस्तुति

हमारे खगेन्द्र ठाकुर

लब्धप्रतिष्ठ आलोचक, प्रगतिशील आन्दोलन के पुरोध
स्मृतिशेष डॉ. खगेन्द्र ठाकुर का व्यक्तित्व और कृतित्व

सम्पादक
शंकर

अतिथि सम्पादक
अरुण कुमार
पूनम सिंह
अश्विनी कुमार

सम्पादक मंडल
हरियश राय
महेश दर्पण

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय, दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2023
द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण : 2024

ISBN 978-81-19019-64-9

प्रकाशक
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032
e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com
फोन : 7291920186, 09350809192
www.anuugyabooks.com

आवरण
परिकथा

मुद्रक
अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

HAMARE KHAGENDRA THAKUR
Literary Criticsim on the Life & Works of Khagendra Thakur ***edited by Shankar***

स्व. डॉ. खगेन्द्र ठाकुर

जन्म : 9 सितम्बर, 1937

निधन : 13 जनवरी, 2020

कृतियाँ

कविता-संग्रह : धार एक व्याकुल • रक्तकमल परती पर

आलोचना : भगवतशरण उपाध्याय • नागार्जुन से दिनकर पर मोनोग्राफ

आलोचना के बहाने • कविता का वर्तमान,

• उपन्यास की महान परम्परा,

• हिन्दी कहानी : प्रगति और परम्परा

विमर्श : समय, समाज और मनुष्य

• आज का वैचारिक संघर्ष और मार्क्सवाद • विकल्प की प्रक्रिया

• प्रगतिशील आन्दोलन के इतिहास-पुरुष

उपन्यास : कारागृह

व्यंग्य-संग्रह : देह धरे को दंड

सम्पादन : उत्तरशती, जनशक्ति

• राष्ट्रीय प्रगतिशील लेखक संघ के महासचिव पद का निर्वाह

• निधन के समय राष्ट्रीय प्रगतिशील लेखक संघ के अध्यक्ष मंडल के सदस्य।

अनुक्रम

प्रस्तुति

स्वप्न के लिए जीवन – *शंकर* 9

अन्तिम लेख

समाजवादी यथार्थवाद –*डॉ. खगेन्द्र ठाकुर* 13

अप्रकाशित कविताएँ 23

लिफ्ट –*डॉ. खगेन्द्र ठाकुर* 23

लेख

भूमंडलीकरण की संस्कृति –*डॉ. खगेन्द्र ठाकुर* 29

नयी शताब्दी का समाज –*डॉ. खगेन्द्र ठाकुर* 36

जनतंत्र बनाम बाजार-तंत्र –*डॉ. खगेन्द्र ठाकुर* 45

सांस्कृतिक एकता की समस्या –*डॉ. खगेन्द्र ठाकुर* 51

वर्तमान परिस्थिति में बुद्धिजीवियों के कर्तव्य –*डॉ. खगेन्द्र ठाकुर* 55

लेखन और संगठन –*डॉ. खगेन्द्र ठाकुर* 61

गाँधी और चम्पारण सत्याग्रह –*डॉ. खगेन्द्र ठाकुर* 68

स्मरण

हमारे नेता खगेन्द्र ठाकुर –*विश्वनाथ त्रिपाठी* 80

खगेन्द्र ठाकुर : संगठन और लेखन की रस्साकशी –*मधुरेश* 83

डॉ. खगेन्द्र ठाकुर : साहित्य और राजनीति के अनन्य साधक –*डॉ. ब्रजकुमार पांडेय* 91

खगेन्द्र जी –*अरुण कमल* 98

पक्षधर की भूमिका में –*रेवती रमण* 106

संगठन और विचारधारा –*अरुण कुमार* 115

हिन्दी आलोचना और खगेन्द्र ठाकुर	*–सतीश कुमार राय*	120
हमारे खगेन्द्र ठाकुर	*–राजेन्द्र राजन*	126
खगेन्द्र जी का जाना !	*–कर्मेन्दु शिशिर*	134
जनपक्षीय आलोचक की दृष्टि में जनकवि का कवि-कर्म	*–मिथिलेश*	138
खैरा पीपल-सा व्यक्तित्व	*–प्रेमकुमार मणि*	150
विनयशीलता के प्रतिमूर्ति थे खगेन्द्र ठाकुर	*–जयनन्दन*	154
आत्मीय छवि	–सूरज पालीवाल	158
अंधेरे से लड़ो–लड़ता है जैसे जुगनूँ	*–पूनम सिंह*	160
मैंने उनको जब-जब देखा लोहा देखा	*–संतोष दीक्षित*	166
कविता की आँख से खगेन्द्र ठाकुर के अमूर्त संसार को देखना	*–रमेश शर्मा*	169
मुझे जिस्त के सफर में मिले शजर सुकूँ के	*–भारती सिंह*	176
मेरे बाबू जी	*–अमितांशु भास्कर*	190
यादों में खगेन्द्र ठाकुर	*–डॉ. कुमार वरुण*	196
प्रगतिशील आन्दोलन के पुरोधा : खगेन्द्र ठाकुर	*–कुमार बिन्दु*	201
खगेन्द्र जी : कुछ यादें	*–एकता प्रकाश*	203

स्वप्न के लिए जीवन

सुप्रतिष्ठित शायर कैफी आजमी जब जीवित थे, तब वे अपने भाषण या उद्‌बोधन में प्राय: कहा करते थे, 'मैं गुलाम हिन्दुस्तान में पैदा हुआ, आजाद हिन्दुस्तान में पला-बढ़ा और अब समाजवादी हिन्दुस्तान में मरूँगा।' स्वप्न का पूरा नहीं हो पाना निस्सन्देह एक दुख, एक संताप है लेकिन यह भी सच है कि इससे स्वप्न की या स्वप्न देखने वाले की गरिमा थोड़ी भी कम नहीं होती है।

खगेन्द्र ठाकुर अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति कैफी साहब की तरह खुलकर तो नहीं करते थे लेकिन उनके जीवन का हर पक्ष चाहे वह प्राध्यापकी हो या प्राध्यापकी का त्याग हो, आन्दोलन-कर्म या संगठन-कर्म हो, सृजन, चिन्तन या लेखन हो, सभाओं में भाषण हो या सेमिनारों-गोष्ठियों में विचारों की अभिव्यक्ति हो या गाँव-गाँव, कस्बों-कस्बों तक परिभ्रमण हो, इसी बात को साक्ष्य देता है कि एक स्वप्न ही था जो उन्हें जीवंत भर निरन्तर क्रियाशील बनाये हुए था... और यह स्वप्न कैफी आजमी साहब के स्वप्न से भिन्न नहीं था।

खगेन्द्र ठाकुर ने जो किताबें लिखी हैं, उनमें एक किताब है–'प्रगतिशील आन्दोलन के इतिहास-पुरुष।' इस किताब में उन्होंने सज्जाद जहीर सहित उन तमाम शख्सियतों पर एक एक अध्याय लिखा है, जिन्होंने भारत में प्रगतिशील आन्दोलन की नींव डाली, उसे एक स्वरूप दिया, उसे गति दी, उसे ऊँचाइयों तक पहुँचाया और उसे भक्ति-आन्दोलन की तरह भारतीय समाज की मुख्यधारा बनाते हुए उससे पूरे समाज को जोड़ा। खगेन्द्र जी ने इन शख्सियतों को सम्मान देने और प्रगतिशील आन्दोलन की परम्परा को सातत्य देने के लिए यह किताब लिखी लेकिन सच यह भी है कि वे स्वयं भी इन्हीं शख्सियतों के बीच समादृत होने के योग्य थे। कहना न होगा कि आज अगर ऐसी ही किताब दूसरी बार लिखी जाये तो निर्विवाद रूप से उसमें एक अध्याय खगेन्द्र जी पर भी होगा।

खगेन्द्र ठाकुर एक तरफ सृजन-चिन्तन और लेखन तथा दूसरी तरफ आन्दोलन कर्म, संगठन कर्म और सार्वजनिक राजनीतिक क्रियाशीलता के अतुलनीय समन्वित व्यक्तित्व रहे थे। उनके व्यक्तित्व में इन दोनों पक्षों में से कौन-सा पक्ष ज्यादा अहम या ज्यादा बड़ा था या इन दोनों पक्षों में से कौन-सा पक्ष प्रमुख था और कौन-सा पक्ष पूरक था, यदि कोई यह समझने-परखने की कोशिश करेगा तो उसके सामने राय बनाने में मुश्किलें आयेंगी,